225
851
H
Microfilm

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1199/10121

आह्वानांक Call No.

अवाप्ति सं० Acc. No. 851

6/2011

(851)
910
11

स्वराज-गीत-गुनगान ।

प्रकाशक—
काली प्रसाद, महादेवलाल ।
सीधारा मोज़फ्फरपुर ।

बजरंग सहाय सिंह,
मैनेजर द्वारा
सेन्ट्रल प्रिन्टिङ्ग प्रेस, मुरादपुर पटनामें
मुद्रित ।

प्रथमवार २००० ।

मुल्य)

बिना मोहर की किताब चोरी की समझी जायगी।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
NO 851
Date 22.12.71
GOVT. OF INDIA
891.431
Sw 25 W

निसियजवा ।

मुसलमान तो हराम कहे हिन्दूकहे पपा पियते अधरम करावे नि० ।
गांजा वो सराव तारी धन बरवाद करे जातभी गमावे कहावे नि० ।
गिलसवा में जै डोमहलखोर पीए वोही तु गिलसवामें पीए नि० ।
घट घट पियलागे छनके करेजवा मे थुथु करके आंख मलकावे नि० ।
चाल चले डगमग नलवा में गिरपड़े कुतवा से मुह में मुतावे नि० ।
पेशाववो मैलाके तनकोन विचारकरे गदहाकेभांति तुलोटाए नि० ।
चलाजात नीसाजब अटपटबोलेजात जासेतासे झगड़ा वेसाहे नि० ।
पकरे सिपाही जब सोटन से मारेलागे बाप बाप कर चिल्लाए नि० ।
बहिनी बेटिआ के गरिआ सुनावे मित काहेन पतीत कहावे नि० ।
अपने तो लातजुता जहांतहां खातफिरे लंगाहोके लाज गवावे नि० ।
निसापीके जासेतासे दंगाकरत फिरे थाना वो पुलिस बोलावे नि० ।
धरमके काममेंतो एकोकौरी देवेनाहि दरुआला रुपया भजावे नि० ।
गांम २ तारीवो सरावके दोकानभेल गांजावोअफीम वेचवावे नि० ।
कई एकलाख करोड़ हजार पाटे टेकस माहाल अपकारी नि० ।
तोहरे रुपयावा से गाय भैंस मारी २ होएला विदेश में चलान नि० ।
अकबरकेराजरहेसोरहसेड़केघीउवीकेअबएहीसेनुचारहीछटाक नि० ।
यहवां तो दुध दही सपना भईलजाले कासेहोई पुजा तेहवार नि० ।
भारत भिखारबाटे यही नु कुनेतवासे इहो पाप तोहरेनु लागी नि० ।
निसवाके रोकेला भाईसब जेल जाले तेकरो न दया तोरालागे नि० ।
मनमामें ज्ञानकरु कहलापै ध्यानधरु करिलेहु निसासे तिलाक नि० ।
दुध दही करुपान होइ कल्यान तब भारत सन्तान बलवान नि० ।
निसवा कारण यदुबंसीकेनाश भइले तोहनीके कौनवा ठेकान नि० ।
कालीलाल चौधरी महम्मदपुरकाजी, मुजफ्फरपुर ।

स्वराज्य लेंगे ।

दरिआइ मैत जलमें उलटे भंवर में पड़कर ।
सैवो वेसताव खाकर अबतो स्वराज लेंगे ॥
हमतुल गए हैं इसपर हम डटगए हैं इसपर ।
कुछभी हुआ करे जी अपनो स्वराज लेंगे ॥
बाजे बजाके लेंगे डंके को पीट लेंगे ।
जैसे मिलेगा लेंगे झुलेमें झूल लेंगे ॥
प्रण कर लिया है हमने इससे भी न टलेंगे ।
गइ प्राण तन से निकले अबतो स्वराज लेंगे ॥
हमको तो कैद करलो सिकड़ से बांध डालो ।
पर हम यही कहेंगे हम तो स्वराज लेंगे ॥
सर को तो तोड़ डालो रसना को काट डालो ।
पर स्वांस यही कहेगा हमतो स्वराज लेंगे ॥
स्वांसा निकाल डालो कफन से ढांक डालो ।
पर लाश कह उठेगी हमतो स्वराज लेंगे ॥
लासों को गाड़ डालो उसको जलाय डालो ।
पर हड्डियां कहेंगी हमतो स्वराज लेंगे ॥
हड्डी को तोड़ डालो चक्के में पीस डालो ।
भुर्रा यही कहेगा हमतो स्वराज लेंगे ॥
भुर्रा आकाश फेंको पातालहु में डारो ।
हवा से यही सुनोगे हमतो स्वराज लेंगे ॥
मन्दिर में जाके देखो हर मूरती से पुछो ।

मसजिद में यही सुनोगे हमतो स्वराज लेंगे ॥
जुर्गों से मांगता था हाथों को जोरता था ।
पर अब न हम कहेंगे हम तो स्वराज लेंगे ॥
गांधी सा हम कहेंगे सौकत सा हम बनेंगे ।
आजाद हो करके हमतो स्वराज लेंगे ॥
तुम से न चीज लेंगे तुमको न चीज देंगे ।
गुलामी अब न करेंगे हमतो स्वराज लेंगे ॥
तनजेब छोर देंगे मलमल भी त्याग देंगे ।
खद्दर को पहन कर हमतो स्वराज लेंगे ॥
कपास भी बुनेंगे सब भाइयों से कहेंगे ।
चर्खा को काट कर हमतो स्वराज लेंगे ॥
चरखे से सूत होगा करघे से हम बुनेंगे ।
अरु प्रेम से पहन कर हमतो स्वराज लेंगे ॥
हम शान्ति से रहेंगे कुछ भी नहीं कहेंगे ।
अरु असहयोग को कर हमतो स्वराज लेंगे ॥
होवे हजार टुकरे इस देह के है मित्रो ।
पर तुम न टेक छोड़ना हमतो स्वराज लेंगे ॥

॥ चेत सबेरे ॥

हमको निर्बुद्धि बनाकर यार बलखाने लगे ।
बेवजह हमको रुला कर आप मुस्काने लगे ॥
ज़ख्म पर हिर्फ़त से अपने नेश रह रह कर लगा ।
मुंह पुराई के लिये दिल चोर सहलाने लगे ॥

तब तो हँसते थे बहुत अब तक रहे ग़फ़लत में हम ।
करवटें देखा बदलते तब से घबड़ाने लगे ॥
सांप जैसा छटपटाते हैं छुछुन्दर को पकड़ ।
घोंटने से कोढ़ अन्धे छोड़ बन जाने लगे ॥
अग्रहरि दो नांव पर चढ़ करके पछताने लगे ।
अब तो औंधे मुंह गिरेंगे पैर छितराने लगे ॥

गीत गुणगान ।

अबतो गांधीजी महराज दियो चर्खा मंत्र स्वराज,
किजे मालिक मदत.हमारी डूबत हैं मझधार ।
भाई हमारा घाटे घाटे कैसे उतरु पार ॥ अबतो गांधीजी० ॥
नेता सबको चुन २ के करलिया गिरफतार ।
मजहब अभी जानेको है कौनसोच बीचार ॥ अबतो गांधीजी० ॥
फर्मान को भी जबत किया है ऐ भाई बद्कार ।
सत्त धर्म पर चलना हो गया दुसवार ॥ अबतो गांधीजी० ॥
हाल सुना पंजाब का हो गया अन्नजल बिना वेहाल ।
बच्चों सबको खुब रुलाया जैसे भूंजे भार ॥ अबतो गांधीजी० ॥
कैसे २ आप बिगारा कहकरके सुधबात ।
पंजाबके अन्दरजाकर देखो नजर होजायगा साफ ॥ अबतोगांधीजी०
कहां २ के रोना रोऊं कहा २ के नाम ।
खानबहादूर लाला होगये डोमर के गुलाम ॥ अबतो गांधीजी० ॥
गांधी अजमल अलीबेरादर मौलाना आजाद ।
नेहरु किचलू लालाजी सब करतेहैं फिरियाद ॥ अबतोगांधीजी० ॥

भारतबासी रो रहे हैं दीनबन्धु भगवान ।
दिन २ अन्याय होत है और करे हैरान ॥ अबतो गांधीजी० ॥
तुमही नाथ अनाथके है वो तुमही के है आस ।
तेरे होत चोरउचक्कर रोजलगावे फांस ॥ अबतो गांधीजी० ॥
बहुत पतितन को तुमहि उबारा नैया करदोपार ।
मेरी बेर पतना देरी ऐ मेरे करतार ॥ अबतो गांधीजी० ॥
भारतवासी तुम्हें पुकारें जोर दोनों हाथ ।
चिंतादुख अबदुर करो श्रीराधेकृष्ण जदुनाथ ॥ अबतो गांधीजी० ॥
हमही भर्ती फौजमें होकर ऐ मेरे करतार ।
जरमन को हम मारभगाया सातसमुन्दर पार ॥ अबतो गांधीजी० ॥
मारभगाकर आए सबतो खूब मोबारकबाद ।
बदला उसका यही मिलाहै दुखभोगी सारीरात ॥ अबतोगांधो ॥
हमही सबतो सभी बने हैं हमही थानेदार ।
भाई हमारा दुखसे रोवे छाती पिटे बेजार ॥ अबतो गांधीजी० ॥
हमही गारी रेलचलावें हमही चौकीदार ।
भाई हमारा टिकट कटावे खाय सोंटेके मार ॥ अबतो गांधीजी० ॥
हमही से सब सेठ बने हैं मालिक और जमीदार ।
हम सबको फुटहा न मिले और बतावे आंख ॥ अबतो गांधीजी० ॥
धानगोहुम हम उपजावे खाए भाई लोग ।
पैसा दे कर भुखे मरतें लोग लगावे भोग ॥ अबतो गांधीजी० ॥
कलतो बनियां हम बनआये आज बनेहैं सेठ ।
हमही सबतो नाचनचाया और किया है ऐंठ ॥ अबतो गांधीजी० ॥
सौ रुपया के नालिस होती खरचा हजार हजार ।

हाई कोर्ट कलकत्ते में भी बेचलिया घरबार ॥ अबतो गांधीजी० ॥
सौ रुपया के डिगरी हुआ खर्चा हुआ साफ ।
रातदीन हैरान भी होना न्यायही है इन्साफ ॥ अबतो गांधीजी० ॥
घरके घर लरते २ बेचलिया घरद्वार ।
हम सबतो खूब मरे हैं तुमतो हैं आजाद ॥ अबतो गांधीजी० ॥
बनियां बनकर हमसे आये खूब किया व्यवहार ।
गाठके पूरे गांहक मिलगै चलगया रोजगार ॥ अबतोगांधी० ॥
सारे भारत दुखमें परेहैं नयापरे मझधार ।
चोरउचक्का पैठ चितावै कैसे उतरु पार ॥ अबतो गांधीजी० ॥
दो रुपया सेर घी बेचवाया चावल साढ़ेपांच ।
गोहुम कातो खबरनहीं है आंटा भेजाउसपार ॥ अबतो गांधीजी० ॥
अपना खैर इसी में चाहो छोरो विराना आस ।
अपना खेती अपने करलो दूसमन होगानास ॥ अबतो गांधीजी० ॥
घर २ चरखा जारी करदो सूतकरो तैयार ।
गांधीजी का एही अर्जहै तब होजावो आजाद ॥ अबतो गांधीजी० ॥
लिखते हैं अखबारों में गांधीजी महराज ।
चरखा करघा घर चलालो होजाये स्वराज ॥ अबतो गांधीजी० ॥
जैतने गोलेगोली कुछनहींहै बिलकुल हैं बेकार ।
चरखा मेरा देखारहाहै सातसमुद्र पार ॥ अबतो गांधीजी० ॥
चसमा देकर आंख लियाहै खूबकिया उपकार ।
रेलचढ़ाकर चालभुलाया धरती होगया पार ॥ अबतो गांधीजी० ॥
थोड़े दिनकी कसर रहीहै सुनलो मेरेयार ।

सुत के गोले तोड़ेंगे अबसब भाईका रोजगार ॥ अबतोगांधीजी० ॥
मोटिया खद्दर पहिनोगे तो होजावोगे आजाद ।
मनचेस्टर तो लड्काशायर खुद होंगे हैरान ॥ अबतो गांधीजी० ॥
अबतो गांधीजी महराज दियो चरखा मन्त्र स्वराज ॥

गज़ल ।

डूबती है चन्द दिनों में आबरू बेहवारकी ।
जै मची चहुंओर भारत गान्धी और सरदार की ॥
बेगुनाहों पर बमोंकी बेखतर बौछार की ।
अब दे रहे हैं धमकियां, बन्दूक और तलवार की ॥
बाग़ जालियां में निहत्थों पर चलाई गोलियां ।
पेट के बल था रेंगाया जुल्म की हत्यार की ॥
हम गरीबों पर किये जितने सितम बेरहमतहां ।
याद भूलेगें नहीं उस भाई बदकार की ॥
या तो हमहीं मर मिटेगें याती ले लेगें स्वराज ।
होती है इस बार हुज्जत खतम अब हरबार की ॥
शोर आलम में मचा है लाजपत के नामका ।
प्यार करना उनको चाहा अपनी मिट्टी खारकी ॥
जिस जगह पर बन्द होगा शेर नर पंजाब का ।
आबरू बढ़ जायगी उस जेल के दीवार की ॥
जेल में भेजा हमारे लीडरों को बेकसूर ।
भाई हमारे ने अच्छी न्याय की भरमार की ॥
खून मज़लूम को सरयुग अब तो गहरी धार में ।
डूबती है चन्द दिनोमें आवरू बेहवार की ॥